'Kill the Bill' Protests

- आंदोलन का अधिकार और पुलिस अधिकार में कई बार तनाव दिखाई देता है। आंदोलनकारी जहां अपने मांगों के लिए अधिक से अधिक स्वतंत्रता की मांग करते हैं, वहीं पुलिस को लॉ एंड आर्डर की स्थिति बनाये रखनी होती है। अधिकारों का यह संघर्ष वैश्विक है और कुछ ही देशों में यह बहुत स्पष्ट और समायोजित है।
- इस समय यूके भी अधिकारों के इस संघर्ष से प्रभावित है और यहां लोग आंदोलन कर रहे हैं। आंदोलन एक बिल को लेकर किया जा रहा है, जिसे यूके की संसद में प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह प्रावधान हैं कि आंदोलन करते समय आंदोलनकारियों को कुछ नियमों का पालन करना होगा। इन नियमों का पालन न करने पर 10 साल तक की जेल का प्रावधान है।
- आंदोलन की गंभीरता को समझने वाले लोगों का मानना है कि यह बिल यदि पास हो जाता है तो इससे आंदोलन का अधिकार ही समाप्त हो जायेगा, और लोकतंत्र का मजबूत आधार समाप्त हो जायेगा।
- **The Police Crime, Sentencing and Courts Bill-** इसे यूके के गृह मंत्रालय की सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, प्रीति पटेल ने संसद में प्रस्तुत किया है।
- इस बिल में पुलिस को आंदोलन के संदर्भ में अधिक अधिकार देने की बात की गई है। किसी ऐसे स्थान आंदोलन हो रहा है, जहाँ पर आंदोलन नहीं हो सकता तो वहां से आंदोलन को हटाने की पुलिस की शक्ति को बढ़ाने की बात की गई है।
- इस बिल के माध्यम से पुलिस को यह अधिकार मिल जायेगा कि वह किसी आंदोलन बाल्कि के अहित में घोषित कर दें तथा आंदोलन को अपराधिक श्रेणी में डाल दे।
- पुलिस को यह अधिकार दिया गया है कि वह निर्धारित करेगी कि कोई आंदोलन किस समय होगा, उसमें कितनी तेज आवाज की अनुमति होगी। इसका पालन यदि कोई आंदोलनकारी नहीं करता है तो उसे अपराधिक कृत्य में शामिल माना जायेगा। इसमें यह भी कहा गया है कि पुलिस ने यदि कोई ऐसा आदेश जारी नहीं किया है तो भी आंदोलनकारियों को इसकी जानकारी रखनी होगी और उन्हें इनका पालन करना होगा।
- कोई ऐतिहासिक महत्त्व के मेमोरियल को नुकसान पहुँचाता है तो उसे 10 साल तक की सजा हो सकती है।
- इसमें यह भी कहा गया है कि आंदोलनकारियों को जमानत आसानी से मिल सकेगी और कोर्ट जल्दी ही इस पर पर निर्णय लेगा।
- सरकार का मानना है कि इससे आम लोगों को आंदोलन से होने वाली दिक्कत कम होगी, पुलिस पर होने वाले हमलों पर रोक लगेगी तथा शांतिपूर्वक आंदोलन को बढ़ावा मिलेगा।
- यूके में इस समय एंटी लॉक डाउन आंदोलन कई जगहों पर आयोजित किये जा रहे हैं, जिसे पुलिस कोरोना संक्रमण का खतरा बताकर केंसिल कर दे रही है।
- **Sarah Everard** नामक एक 33 वर्षीय महिला की हत्या कुछ समय पहले कर दी गई थी। हत्या के आरोप में एक पुलिस अधिकारी को गरिफ्तार किया गया। पुलिस के खिलाफ यहाँ एक आंदोलन चल रहा था। इसी समय यूके की संसद में पुलिस को अधिक अधिकार देने वाला बिल प्रस्तुत किया गया। इससे पूरे देश में आंदोलन प्रारंभ हो गये।

अमेरिका ने भारत को अफ्रीका स्वाइन फीवर से प्रभावित देशों सूची में शामिल किया

- अमेरिका के कृषि पशु और वनस्पति स्वास्थ्य निरीक्षण सेवा **(APHIS)** विभाग ने गुरूवार को कहा कि हम भारत को उन क्षेत्रों की सूची में शामिल कर रहे हैं, जिन्हें हम स्वाइन फीवर **(ASF)** को प्रभावित मानते हैं।
- अमेरिका ने भारत को अफ्रीका स्वाइन फीवर से प्रभावित देशों सूची में शामिल कर दिया है और इसके साथ ही अब देश से पोर्क और पोर्क उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है।
- **APHIS** ने यह निर्णय पोर्क से स्वाइन फीवर फैलने की संभावना की वजह से लिया है।
- भारत द्वारा वर्ष 2020 में पोर्क और संबंधित उत्पादों को अमेरिका को लगभग 500,000 डॉलर का निर्यात किया गया था।
- **अफ्रीकी स्वाइन फीवर (ASF)-**
- यह सुअरों में पाये जाने वाला रोग है जो घरेलू और जंगली सुअरों को प्रभावित करता है।
- इससे संक्रमित होने वाले सूअर को रक्तस्राव की समस्या उत्पन्न होती है और उसकी मृत्यु हो जाती है।
- संक्रमित सूअरों के द्वारा या उनके मांस से यह बीमारी तेजी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैल सकती है।
- यह तेजी से फैलता है, इस कारण ऐसी बीमारी के विषय में तुरंत विश्व स्वास्थ्य संगठन को सूचित करना होता है।
- इस बीमारी का संबंध एसफेरविरिडे परिवार के एक डीएनए वायरस से है।
- इससे पशुधन और पशु मांस व्यापार बड़ी मात्रा में प्रभावित होता है इस बीमारी का संचरण पोर्क के अलावा कोमाइट्स (गैर-जीवित वस्तुओं) जैसे जूते, कपड़े, वाहन, चाकू आदि से भी हो सकता है।
- अफ्रीकी स्वाइन फीवर से मनुष्यों को तो ज्यादा नुकसान नहीं होता है लेकिन पशुधन को बहुत नुकसान होता है।
- इसके लिए अभी कोई बैध टीका नहीं विकसित हो पाया, जिसके वजह से संक्रमण को इससे दूर रह कर ही रोका जा सकता है।

असमानता घटाने की प्रतिबद्धता सूचकांक 2020

- ऑक्सफैम इंटरनेशनल, गैर सरकारी संगठनों का समूह है, जिसे 1995 में गठित किया गया था। इसका सचिवालय नैरोबी, केन्या में है।
- इसका उद्देश्य वैश्विक गरीबी और असमानता को कम करना, दक्षता में वृद्धि करना है।
- ऑक्सफेम द्वारा असमानता घटाने की प्रतिबद्धता सूचकांक को जारी किया जाता है। सूचकांक के आधार के रूप में श्रमिक अधिकार, सार्वजनिक सेवायें और कराधान का प्रयोग किया जाता है।
- इसके द्वारा असमानता घटाने की प्रतिबद्धता सूचकांक **[Commitment to Reducing Inequality (CRI) Index] 2020**, को अक्टूबर 2020 में जारी किया गया था। यह सूचकांक का तीसरा संस्करण था।
- अक्टूबर 2020 में जारी इस इंडेक्स में भारत को 158 देशों की सूची में 129 वां स्थान प्राप्त हुआ था।

- सूचकांक के अनुसार, भारत महामारी के दौरान असमानता से निपटने में दुनिया के सबसे खराब प्रदर्शन वाले देश की सूची में शामिल किया गया था।
- सूचकांक में शामिल 158 देशों में से महामारी से पहले केवल 26 देश ही स्वास्थ्य पर अपने बजट का अनुशंसित 15% खर्च कर रहे थे। भारत के विषय में कहा गया था कि भारत स्वास्थ्य बजट दुनिया का चौथा सबसे कम बजट है और केवल आधी आबादी को ही आवश्यक बुनियादी स्वास्थ्य सेवायें मिल पाती हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार 103 देशों में श्रमिकों के बुनियादी श्रम अधिकारों और सुरक्षा का अभाव था।
- सूचकांक में सर्वोच्च स्थान नार्वे को प्राप्त हुआ था इसके बाद क्रमशः डेनामर्क, जर्मनी, बेल्जियम और फिनलेंड को स्थान प्राप्त हुआ था।
- अंतिम स्थान (158 वां स्थान) दक्षिण सूडान को प्राप्त हुआ था। इसके बाद नाइजीरिया एवं बहरीन का स्थान था।
- भारत को लेबर रैंकिंग में 151वां स्थान मिला था। वर्ष 2018 में भारत को इस कैटेगरी में 141 वाँ स्थान प्राप्त हुआ था। सार्वजनिक सेवा की कैटेगरी में 2020 में भारत को 141 वां स्थान तथा कराधान मापदंड के आधार पर भारत को 19वां स्थान प्राप्त हुआ था।
- भारत का कुल रैंक (129वां) जो प्राप्त हुआ था उसके पीछे कुछ कारण निम्नलिखित थे-
  1. कोरोना के दौरान कई राज्यों में दैनिक कार्य की अवधि 8 घंटे से बढ़ाकर 12 घंटे करना, न्यूनतम वेतन कानून को स्थगित करना।
  2. अधिकांश मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी मिलना।
  3. 71% मजदूरों को कोई लिखित अनुबंध प्राप्त नहीं।
  5. औपचारिक क्षेत्र में कार्यबल का केवल 10% होना।
- हाल ही में श्रम और रोजगार मंत्री संतोष गंगवार ने इस इंडेक्स के विषय में कहा है कि इसमें स्पष्टता का अभाव है और इसे तैयार करते समय कई लेबर कोड को ध्यान में नहीं रखा गया है।

बांग्लादेश आजादी की 50वीं सालगिरह

- बांग्लादेश गणतंत्र भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है, जो आजादी की 50वीं सालगिरह मना रहा है।
- भारत और बांग्लादेश एक दूसरे से 4096 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं। बांग्लादेश की उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी सीमा भारत से लगती है तो दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण पूर्व में बांग्लादेश है।
- भारत की आजादी के समय वर्तमान बांग्लादेश पूर्वी पाकिस्तान के रूप में था। पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान पाकिस्तान के मध्य लगभग 2000 किलोमीटर की दूरी थी, लेकिन शासन व्यवस्था केंद्रीकृत थी और सभी प्रमुख निर्णय पश्चिमी पाकिस्तान से लिये जाते थे।
- नव-निर्मित पाकिस्तान (पूर्वी-पश्चिमी) की जनता का धर्म एक था, लेकिन उनके बीच जाति और भाषागत काफी दूरियाँ थी। इसीकारण पाकिस्तान के बनने के बाद से ही भाषागत तनाव ने नये राष्ट्र बनने की नींव रख दी थी। पूर्वी पाकिस्तान की जबान बांग्ला थी जबकि पश्चिमी में उर्दू बोलने वाले कुलीन वर्ग के पास सत्ता

थी। वर्ष 1952 में पाकिस्तान की सरकारने उर्दू को पूरे देश की अधिकारिक घोषणा की इसके बाद यह तनाव और बढ़ गया जो धीरे-धीरे बांग्लादेश की आजादी के रूप में बदल गया।

- पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के बीच सिर्फ भाषागत मुद्दा नहीं था, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक मुद्दा भी था। अरअसल पूर्वी पाकिस्तान की हर तरह से अनदेखी पश्चिमी पाकिस्तान के द्वारा किया जाता था।
- वर्ष 1970 में हुए चुनाव में शेख मुजीबुर रहमान की आवामी लीग ने पूर्वी पाकिस्तान की 162 में से 160 सीटें जीत लीं। जुल्फीकार अली भुट्टों की पाकिस्तान पीपल्स पार्टी **(PPP)** ने पाश्चिमी पाकिस्तान की 138 में से 81 सीटों पर जीत हासिल की थी। इस तरह बहुमत मुजीबुर रहमान के पास था और उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहिए था लेकिन पाकिस्तान के सैन्य शासन ने ऐसा नहीं होने दिया।
- इस समय सेना की कमान जनरल याह्या खान के पास थी। याह्या खान और जुल्फीकार अली भुट्टो ने रहमान से कई हफ्ते बात की लेकिन जब वह तैयार न हुए तो याह्या खान ने सेना के माध्यम से पूर्वी बांग्लादेश में ज्यादतियाँ शुरू कर दीं।
- मार्च 1971 तक आते-आते आवामी लीग का काडर सड़कों पर था, जगह-जगह प्रदर्शन हो रहे थे, हड़तालें चल रहीं थीं और पाकिस्तान की सेना खुलेआम बर्बरता कर रही थी।
- भारत ने आवामी लीग की जीत के साथ ही अपना समर्थन मुजीबुर रहमान को दिया था लेकिन यहां सेना की ज्यादतियों के खिलाफ सीधे दखलंदाजी नहीं करने का फैसला भी भारत ने ले रखा था। जैसे-जैसे यहां की स्थितियाँ विकराल होती गईं भारत अपने फैसलों में भी परिवर्तन करता गया।
- 15 मई 1971 को भारतीय सेना ने 'आपरेशन जैकपॉट' लांच किया, जिसके तहत मुक्ति वाहिनी के लड़कों को ट्रेनिंग, हथियार, पैसा और साजो-समान की सप्लाई मुहैया करवाई गई।
- बांग्लादेश की मुक्ति वाहिनी में पूर्वी पाकिस्तान की मिलिट्री, पैरामिलिट्री और नागरिकों की सेना थी, जिसका लक्ष्य गुरिल्ला युद्ध के जरिये पूर्वी पाकिस्तान को आजाद करवाना था। भारतीय सेना अभी इसमें शामिल नहीं थी लेकिन पाकिस्तान ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जिसकी वजह से भारत के शामिल होना पड़ा।
- 3 दिसंबर 1971 को पाकिस्तान के एयरफोर्स ने भारत के पश्चिमी क्षेत्रों पर हमला कर दिया। 4 दिसंबर की सुबह तक भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध की घोषण कर दिया।
- भारतीय सेना पहले से ही मुक्ति वाहिनी को अपने हिसाब से ट्रेंड कर चुकी थी और सेना को सरकार के सिर्फ एक आदेश का इंतजार था।
- इंदिरा गांधी ने इस संकट के प्रारंभ से युद्ध प्रारंभ होने तक दृढ़ धैर्य बनाये रखा जबकि इस दौरान भारत में शरणार्थियों की संख्या और कई तरह के तनाव बढ़ते जा रहे थे।
- जब भारत पर हमला हुआ, उस समय इंदिरा गांधी कलकत्ता में थीं। वे जल्द दिल्ली पहुँची और देश को संबोधित करते हुए कहा- ''हम पर युद्ध थोपा गया है।'' यह एक भारत की एक कूटनीतिक जीत थी।
- इंदिरा गांधी का युद्ध को लेकर नजरिया एकदम साफ/स्पष्ट था- ''यह छोटा और निर्णायक'' होना चाहिए। यदि युद्ध लंबा खिचेगा तो अमेरिका और चीन की दखलंदाजी बढ़ सकती है।

- यदि युद्ध लंबा खीचे तो भी इंदिरा गांधी ने इसकी तैयारियाँ कर ली थीं। वह मार्च से अक्टूबर 1971 तक दुनिया के प्रमुख नेताओं को खत लिखकर भारत की सीमा पर चल रहे तनाव की जानकारी दे चुकी थीं। वह 21 दिन तक जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, बैल्जियम और अमेरिका का दौरा कर पूर्वी पाकिस्तान में सेना द्वारा किये जा रहे नरसंहार की जानकारी दे चुकी थीं।
- 1971 में इंदिरा गांधी **USSR** पहुँची। उस समय के तत्कालीन राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव ने इंदिरा गांधी को आवश्वासन दिया कि यदि भारत-पाकिस्तान युद्ध होता है तो रूस भारत के साथ होगा।
- अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन और विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर पहले से ही भारत के खिलाफ रूख अपनाये हुए थे।
- इंदिरा गांधी को सैन्य चीफ फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ का सहयोग मिला जो सही समय आने का इंतजार कर रहे थे। इंदिरा गांधी ने फील्ड मार्शल पर भरोशा किया और समय का इंतजार किया।
- 4 दिसंबर को भारत युद्ध में शामिल हो गया। इसके बाद अमेरिका ने आशा के अनुरूप अपनी सातवीं फ्लीट को बंगाल की खाड़ी में भेजा दिया। यह दुनिया के सबसे मजबूत फ्लीट में एक था, जिसमें दुनिया का सबसे बड़ा वॉरशिप भी शामिल था। अमेरिका को लगा था कि भारत इसे घबराकर कदम पीछे खींच लेगा। ब्रिटेन की नेवी अमेरिका की मदद के लिए आगे बढ़ रही थी।
- इंदिरा गांधी घबराने की बजाय और मजबूत हुई और उन्होंने सोवियत रूस से इंडो-सोवियत सुरक्षा समझौते को एक्टिव करने के लिए कहा।
- रूस ने अपनी एक फ्लीट को बंगाल की खाड़ी के लिए रवाना कर दिया। यह फ्लीट भी परमाणु हथियार से लैस थी। रूसी फ्लीट को देखकर ब्रिटेन की नेवी वापस चली गई और अमेरिका भी शांत रहा। 13 दिसंबर को रूस ने फ्लीट भेजा था और भारत 16 दिसंबर को युद्ध जीत चुका था।
- इस समय तक भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सेना को हर तरह से नियंत्रित कर दिया था और पाकिस्तानी सेना घुटने टेकने की अवस्था तक पहुँच चुकी थी।
- 16 दिसंबर 1971 को पाकिस्तानी सेना के पूर्वी कमांडर के इंचार्ज जनरल एए खान नियाजी ने भारतीय सेना के पूर्वी कमांड के इंजार्ज लेफ्टिनेंट जनरल जेएस अरोड़ा को अपनी सर्विस रिवाल्वर सौंप कर समर्पण कर दिया।
- शाम को 5 बजे सैम मानेकशॉ ने इंदिरा गांधी को जानकारी दी कि पाकिस्तानी सेना ने बिना शर्त सरेंडर कर दिया है। इंदिरा गांधी ने घोषणा की- ''ढ़ाका अब आजाद देश की राजधानी है।''
- सरेंडर के बाद इंदिरा गांधी ने सीजपुायर का ऐलान कर दिया इससे वह दुनिया को यह संदेश देना चाहती थीं कि भारत क्षेत्री लाभ नहीं कमाना चाहता है।
- तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष अटल बिहारी वायजेयीने इस अवसर पर इंदिरा गांधी को ''अभिनव चंडी दुर्गा'' कहकर सम्मानित किया।